अंतरा-शब्दशक्ति

भोले मन की बात

काव्य संग्रह

विमला महरिया ''मौज''

भोले मन की बात

(काव्य संग्रह)

विमला महरिया 'मौज'

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-44-5

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © विमला महरिया 'मौज'

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Bhole Man ki Baat' by 'Vimla Mahariya 'mauj''

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भोले मन की बात

भोले मन में भर चली, मानवता का ओज।
सुखी रहे जन-जन सदा,करे कामना "मौज"।।

मन के हारे,हार है!मन के जीते,जीत!! सच कहा गया है। मनुष्य की हार-जीत, खुशी-गम,आशा-निराशा और भावनाओं में निरंतर उतार-चढ़ाव सबकुछ मन के अधीन होता है। जीवन संग्राम में कई बार इंसान की हार होती है,कई बार जीत और इसी हार-जीत का सिलसिला सदा-सर्वदा चलता रहता है।जब जीत होती है तो मनुष्य खुशी से फूले नहीं समाते और हार हाथ लगे तो निराशा और अवसाद से घिर जाते हैं। जीवन पथ पर फूल और कांटे दोनों हैं। विपरीत परिस्थितियों में मन की परीक्षा होती है।टूट गया तो सबकुछ डूब गया; अडिग रहा तो देर-सवेर परिस्थितियों को बदलना ही होगा। परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है और स्वाभाविक है।धरती पर अधिकांश लोगों को परिवर्तित परिस्थितियों से गुजरना ही पड़ता है। कुछ ही अति भाग्यशाली होते हैं जिनके जीवन में निरंतर समानता बनी रहती है। खैर!! सबके जीवन जीने की कला और अंदाज अलग-अलग होते हैं। और विभिन्न परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमताएं भी बहुत कुछ भिन्न होती हैं।

मेरी रचनाएं मेरे मनोभावों की अभिव्यक्ति तो हैं ही; मेरे संघर्षशील जीवन की झलकियां भी हैं। मैंने अपने जीवन में उत्थान और पतन दोनों देखे हैं। नकारात्मक परिस्थितियों में किस प्रकार खुद और परिवार को संभाल लिया जाता है मुझे बखूबी आता है। मैं असीमित आशाओं की धनी, दृढ़ निश्चयी,कठोर परिश्रमी और मानवता की पोषक हूं। मुझे अन्याय-अत्याचार और नकारात्मक विचारों से सख्त घृणा है। मैं सब मनुष्यों की अच्छाई और सद्‌गुणमयी छवि को सदैव नमन करती हूं। अपने सबसे करीब प्रकृति और पर्यावरण तथा मासूम बचपन को पाती हूं। नकारात्मक परिस्थितियों में मेरा मन बहुत आंदोलित होता है और अंततः विजयी होता है तथा एक नई दिशा और नया मार्ग तलाश लिया जाता है। सुकोमल भावानुभूति यों से पूरित मेरी रचनाएं स्वत: सभी पाठकों को बांध लेती हैं।

भोले मन की बात में कुछ लघु कविताएं हैं जो विविध विषयों को लेकर रचित हैं। मैं असहज स्थिति में अपनी कलम की संगति करती हूं।तब मन को शांति मिलती है।मेरा मन बच्चे जैसा है।इसे कोई और समझे या नहीं मैं खुद बखूबी समझती हूं और नियंत्रित भी कर लेती हूं। संवेदना शून्य वर्तमान समाज में चेतनता

और मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता लाने की मैं भरसक कोशिश करती हूं और मैं पूर्णतः नहीं तो अंशत: जरुर अपने उद्देश्य में सफल होती हूं। पता नहीं जीवन कितना बड़ा है मगर जितना भी है कुछ कर गुजरने की तमन्ना लिए चलती हूं और सभी सुधि पाठकों से अनुरोध करती हूं कि भारतीय संस्कृति, भारतीय विज्ञान, भारतीय दर्शन, भारतीय धर्म और भारतीय भाषा सचमुच संपूर्ण विश्व में सर्वोत्तम हैं और यही उत्तमता की भावना हमें सब जगह विशिष्ट पहचान दिलाती है। अतः हमारी मूल्यवान विरासत को सहेज कर संरक्षण में सहयोग कर अपने देश के गौरव को चार चांद लगाएं! हमारी अतुलनीय धरोहरों को संरक्षित और संधारित कर भारतीयता का ध्वज वसुधैव कुटुंबकम् की भावना के साथ संपूर्ण विश्व में फहराएं!!! अकेले नहीं, आइए सब मिलकर कुछ अद्भुत और अलौकिक करें!!

जय हिंदी!! जय हिन्द!!!

विमला महरिया "मौज"

अनुक्रमणिका

1. समझौते के तार!!!	**5**
2. यों ही नहीं महबूब बदलते हैं.....!!!!	**6**
3. मैं तेरी हूं!	**7**
4. जीवन अनमोल है	**8**
5. गाऊं गीत सुहाने	**9**
6. प्रतीक्षा	**10**
7. बसंत	**11**
8. दुख रैना	**12**
9. व्यथा	**13**
10.दीया-बाती	**14**
11.ये उन दिनों की बात है!!!	**15**
12.आदमी में आदमी	**16**

समझौते के तार!!!

इच्छाएं अट्टहास कर रही करती चाहतें तांडव।
कामनाएं कौरव हो गई, कर्म हो रहे पांडव।।

समझौते के तार पकड़ कर बढ़ता आगे मानव ।
मतलब डफली जोर बजाकर नाचे जैसे दानव ।।

दीन-हीन का ध्यान नहीं है मैं-मेरा का दौरा ।
संचित करने सब धरती का चले चाल मन घौरा।।

उलझा जाए कपट जाल में खोदे खाई सिर से।
मात मिले चेता ना पाए करे जतन खर फिर से।।

ना चाहे सच कहना-सुनना बसे झूठ तन-मन में।
जीवन सार साधना सच को टूटें सांसें क्षण में।।

मिली जिंदगी सत्कर्मों हित नहीं व्यर्थ खोनी है।
मैली होती प्रीत चदरिया पुण्य कर्म से धोनी है।।

अपनेपन की लिए तराजू "मौज" तोलती मन को।
लिखती परखी बात कलम से करे सफल जीवन को।।

यों ही नहीं महबूब बदलते हैं.....!!!!

कहां चली तू लिए पताका प्यार की
कहां चली तू भूल वफाएं यार की!!!!

माना कि मन के अरमान मचलते हैं
पर यों ही नहीं महबूब बदलते हैं!!!!

खुदगर्ज जहां तुझे रोज बतलाएगा
खोए अपने कौन खोजकर लाएगा!!!!

जलता है पग-पग दीप तेरे प्यार का
रोक उठा तुफान तेरे व्यवहार का!!!!

बहुत हुआ खेल तेरी चतुराई का
घट जाता है पल में भाव बुराई का!!!!

चाह करे आबाद कभी बर्बाद करे
गम के गहरे घाव भला फिर कौन भरे!!!!

"मौज" ये मन दुश्मन भोले इंसान का
मौहब्बत सौदा है सिर्फ ईमान का!!!!

मैं तेरी हूं!

सदियों का है साथ, मैं कब से तेरी हूं
जब से सूरज-चांद मैं तब से तेरी हूं ।
मेरे- तेरे साथ की बात पुरानी है
जीवन का आगाज मैं जब से तेरी हूं।।

सच्ची साथी अपनी प्रेम कहानी है
छू ले हर मन सच में बड़ी रुहानी है।
मुश्किल राहों को आसान बनाया है
इस धरती पर प्यार की पौध उगानी है।।

नहीं डरे हम भीषण घोर तुफानों में
मिलता नहीं है सच्चा साथ दुकानों में
थामे रखा एक-दूजे को सदा-सदा
लिखी मिलेगी गाथा वेद-पुरानों में ।।

यकीं हमारा ना टूटा नहीं टूटेगा
सच्चाई का साथ कभी नहीं छूटेगा।
"मौज-दीप" की बात बड़ी अलबेली है
आभार तेरा भगवान! भाव नहीं टूटेगा।।

जीवन अनमोल है

जीवन है अनमोल जिंदगी छोटी है।
छोटे हैं दिन-रात बड़ी कसौटी है।
पल-पल छिन-छिन वक्त गुजरता है
एक तरफ अरमान दूसरे रोटी है।।

समय प्रबंधन मूल काम है जीवन में।
अनुबंधन मन का मन से है जीवन में।
संतुलन साधक हर खेल में सफल रहे
भोले मन तो रहे टूटते जीवन में ।।

माना कि अनमोल जिंदगी अपनी है
सुख हो दुख हो आखिरकार गुजरनी है।
क्यों नहीं हम हंसी-खुशी से काट लें
ये जीवन की नदिया पार उतरनी है ।।

सब रिश्तों की डोर बंधी हो प्यार में
हर मुश्किल आसान लगे है प्यार में।
प्रेम मूल है जीवन के व्यापार का
समझ लीजिए सार बहुत है प्यार में।।

हंसना-रोना,जीना-मरना जारी है
आए हैं तो जाना नियती हमारी है।
"मौज" जिंदगी नाम ही आना-जाना है
सच का दामन थाम लें सांस उधारी है।।

गाऊं गीत सुहाने

उड़ती फिरूं उन्मुक्त गगन में
सखी रे गाऊं गीत सुहाने।
हवा के संग ताल मिलाऊं
सब पखियों को मारूं ताने ।।

तारों से अठखेली करती
पल में चंदा पर चढ़ जाऊं।
बूढ़िया ने काता है सूत
चुनरी बना के ले आऊं।।

बादलों की बैठ पालकी
बारिश को लेती आऊं।
अपनी धरा के रंग अनौखे
मैं नभ को देती आऊं।।

परियों की रानी से मिलकर
सुख-दुख सारे कह डालूं।
मानवता पर पड़ी बलाएं
मैं थोड़ी तो शायद टालूं ।।

गर मिल जाए घर ईश्वर का
दरवाजे पर दस्तक दे दूं।
धरती पर भी आओ देवा
सबके हित न्योता दे दूं।।

काश "मौज" का सच हो सपना
धरती पर खुशहाली रहेगी।।
प्रेम की बारिश फसल प्रेम की
प्रेम फूल, फल, डाली होगी।।

प्रतीक्षा

सब अधरों पर नाचे मुस्कान
सब हृदय भाव प्रफुल्लित हो।
गूंजें हर गली गीत खुशी के
झूमे पोर-पोर मुकुलित हो।।

मड़ें मांडणें आंगन-आंगन
जब फूल खिलें क्यारी-क्यारी।
बचपन की किलकारी सुनकर
मुदित भावना बढ़े हमारी ।।

सबके सपने सच हो जाएं
हुलसित-पुलकित सब युवा रहें।
भेद न हो मानव-मानव में
सुख-दुख बांटें मन मन से कहें।।

मानव का धन मानवता हो
अपनापन ही अपनापन हो।
संस्कार पूरित जीवन हो
सब सोच विचार सनातन हो।।

आदर सबका करें सभी जन
नेह भाव हों भरे सभी मन।
यही प्रतीक्षा करे "मौज" नित
संचित सुख ही हो सबका धन।।

बसंत

कुदरत के दरबार में फिर से,
आया-आया नवल बसंत।
खिलती कलियां मचले भौंरे,
मुस्काया है ऋतुराज कंत ।।

छलक पड़े घट आशाओं के,
इन्द्रधनुषी सपने हो गए हैं।
पुलकित मन बौराया सखि रे,
सारे पराए अपने हो गए हैं।।

नेह-नीर रस भीगा आलम,
पीत चुनरिया लहरायी है।
नव-उमंग तरंगें उठती,
चहुंओर बहार छायी है ।।

नव-पल्लव-पर निकल पड़े,
उड़ने लगा है प्रीत-पराग ।
फूलों का गदराया है यौवन,
उलझी हैं लताएं तन-अनुराग।।

राग मल्हार छेड़ते पंछी,
गूंज उठा मण्डल सारा ।
कर किल्लोल मनाएं उत्सव,
सब जीव-जगत मंगलकारा।।

दुख-सुख बतियाते हैं तरुवर,
है हवा बासंती मन भावन।
प्रेम बदरिया रिमझिम बरसे,
मानो आया भटका सावन।।

बालक-मन फागुन रंग छाया,
हुआ मुदित मयूरा नाच उठा ।
मौज-दीप की ज्योति बसंती,
तन-मन-जीवन सब नाच उठा।।

दुख रैना

बीतेगी दुख की रैना,
सुख का सूरज निकलेगा।
आशाओं की झोली में,
नवजीवन फूल खिलेगा।।

छंट जाएंगे घन काले
घनघोर निराशाओं के।
धीरे- धीरे विकसेंगे,
धवल सुमन आशाओं के।।

मन का मैल निथर जाएगा
निर्मल नैनों के जल से।
समय मुक्त हो जाएगा,
इस कालरात्रि के छल से।।

मेरे मन की चतुर मयूरी
नाचेगी नित मधुबन में।
भूलेगी सब शिकवे गिले
नहीं सार इस उलझन में।।

सुख की बदली जब बरसेगी
नित अंकुर नूतन फूटेंगे।
हरा-भरा होगा मन आंगन
"मौज" सब पात पुराने छूटेंगे।।

व्यथा

ये सांसों का ताना-बाना
ये जीवन का छिन-छिन जाना।
किस ओर बंधा है रब जाने
किस छोर बंधा है रब जाने।।

यह गूढ़ पहेली कब सुलझी
हर ओर अधिक ही है उलझी।
उलझनें उलझती रही सदा
तप धूप झुलसती रही सदा।।

किसने जीवन को बांधा है
तब मिले गोद अब कांधा है।
पलने से पलना लिए चला
यह नियम भला है कब टला।।

कितने प्रश्नों की झड़ी लगी
बालक मन को गम छड़ी लगी।
मंथन के नतीजे सिफर रहे
बंधन सपनों से बिखर रहे।।

कल अपना था पर आज नहीं
बिन मिले सुरों में साज नहीं ।
किस ओर निकल कर चला गया
भोला मन पल-पल छला गया।।

यह कौन विधाता लिखता है
जो हर पल घटता दिखता है।
यह भ्रम है या सच गूढ़ कोई
है पण्डित या फिर मूढ़ कोई।।

जो खेल रहा नित मानव से
कह झूठ बड़ा है दानव से ।
खुद जनम-मरण से मुक्त हुआ
है अमर अमरता युक्त हुआ।।

मैं लिए रोशनी खोज रही
हां इसीलिए मन "मौज" रही।
यह विकट समय की करुण कथा
ली देख मौत सी तरुण व्यथा।।

दीया-बाती

मन से पूजा कर्म हाथ से
संभव है सब तेरे साथ से।
दिल में सच का भरा उजाला
सदा झूठ का है मुंह काला ।।

तुझ पर यकीं खुद से ज्यादा
सुख-दुख बांटें आधा-आधा।
परहित दोनों मिलकर साधें
खुशियों का हम पल-पल बांधें।।

हमदम मेरे साथ खड़ा हो
ज्यों सोना- सुहागा जड़ा हो।
एक - एक ग्यारह होते हैं
सुख के पौ बारह होते हैं।।

गीत हुए सत्कर्म हमारे
एक-दूजे को मिले सहारे ।
सबको साथ लिए चलते हैं
"दीया-बाती" संग जलते हैं।।

मानवता की अलख जगाते
अज्ञान अंधेरे दूर भगाते ।
"मौज" गा रही प्रीत आरती।
स्नेहभाव जग में फैलाती ।।

ये उन दिनों की बात है!!!

नहीं सांच को आंच थी, नहीं था व्यभिचार।
बात-बात का मोल था, सुखमय था घर-बार।।

आंखों में अंदाज था,दिल में था आभार।
सब रिश्तों में प्रेम था,अपना था संसार।।
घर-घर दीपक प्रेम के, जलते थे हर ओर।
सब खुशियों में खेलते, ना ही थे मन- चोर।।

बड़े थे बंधन प्रेम के,तब छोटे थे पाप।
अब मतलब का जोर है, नहीं रहा अपनाप।।
ये तो तब की बात है,जब थी हर-मन सांच।
सुख में चाहे एक हो, रहते दुख में पांच।।

अपनेपन की भावना,भरी हुई हर बात।
हंसी-खुशी दुख बांटती, पनघट सखियां सात।।
चलती शीतल पावनी,महक हवा मुसकाय।
करती बातें पेड़ से,ताली पात बजाय।।

मीठे जल की गागरी, रखी हुई हर द्वार।
पीये प्यास बुझती सदा, तपे जेठ या क्वार।।
घूंघट में चंदा वदनी, बिजली जैसी नार।
मधुर बोल मन मोहते,झर-झर झरता प्यार।।

"दीप" देहरी सांझ को,जलता सारी रात।
रंगरसिया रस प्रेम की, खतम न होती बात।।
"मौज" ये तब की बात है,जब थे अपने गांव।
प्रीत बरसती बादली, नीम-पीपली छांव।।

आदमी में आदमी

आदमी में आदमी को ढूंढने,
मैं दर-दर भागती रही।
कोरे सपनों को सच करने,
मैं दिन-रात जागती रही।।

हो अमन घर में सभी के
दुआ मन से बांचती रही।
रही देखती मुर्झाए चेहरे
दर्द दिल का नापती रही।।

आंखों में अश्क हजार लिए
मुस्कान तेरे लिए मांगती रही।
कभी चली राह कांटों भरी
कभी अंगारों पर नाचती रही।।

हर गली- गली हर घर गई
हर मन में ममता जांचती रही।
भरती रही दामन खुशियों से तेरा
अपना कोरा मन मांजती रही।।

नित अंधकार का हर कोना
खुद जल रोशन करती रही।
सब मतलब सधने से खुश थे
"मौज" अकेली मचलती रही।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - विमला महरिया 'मौज'

जन्म - 20.12.1980, सिंगोदड़ा (लक्ष्मणगढ़), सीकर (राजस्थान)

पति - डॉ. प्रदीप कुमार 'दीप'

शिक्षा - एम.ए. (अंग्रेजी, हिन्दी, समाजशास्त्र), बी.एड., पी.एच.डी. शोधरत (समाजशास्त्र), मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि. उदयपुर (राज.)

शोध विषय - स्वास्थ्य एवं सामाजिक विकास में योग की भूमिका: राजस्थान का एक समाज शास्त्रीय अध्ययन

पता - विमला महरिया 'मौज', डब्लू/ओ. डॉ. प्रदीप कुमार 'दीप', बेसवाल निवास, वार्ड नं. 15, लक्ष्मणगढ़, जिला- सीकर (राज.), पिन- 332311

मो. - 9461541031

ई-मेल - Ojaswadeep@gmail.com

सम्प्रति - अध्यापिका, राजकीय सावित्री बालिका उच्च.मा.विद्यालय, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

प्रकाशन - चित्कार उठी किरकारी, माँ पुकारे लाड़ले, सोन-पिपासा, बचपन पुकारे, बालक मन के भोले गीत, आदि - काव्य संग्रह

नायाब सखी साहित्य संग्रह, मकरंद (दोहा मुक्तक साझा संकलन) स्पंदन, अविरल धारा उजास, अभिव्यक्ति, काव्य करुणा, नव चेतना, सुपथ के राही, अर्पण आदि साझा काव्य संग्रह एवं अन्य प्रकाशित।

सम्मान

1. शक्ति सम्मान, नागरिक परिषद् लक्षमणगढ़, सीकर (राज.)।
2. श्रीमती सुन्दरदेवी डागा स्मृति सम्मान, जगमग दीप ज्योति, अलवर (राज.)।
3. चौधरी चरण सिंह रत्न सम्मान, जाट महासभा, सीकर (राज.)।
4. गणतंत्र दिवस सम्मान, ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी, लक्ष्मणगढ़, सीकर (राज.)।
5. श्रीमती उमादेवी पटेरिया सम्मान- 2017 (हिन्दी लेखिका संघ, भोपाल म.प्र.)
6. शतकवीर सम्मान, मगसम (नई दिल्ली)।
7. श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान (विश्व हिन्दी रचनाकार मंच नई दिल्ली)।
8. स्वतंत्रता दिवस सम्मान-2017, जिला प्रशासन, सीकर (राज.)।
9. भाषा सारथी सम्मान-2018, मातृभाषा उन्नयन संस्थान।
10. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान - 2018, मातृभाषा उन्नयन संस्थान।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-44-5

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com